शोध मंथन Vol. XV No.II Apr.-June 2024 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

आधुनिक विश्व और महात्मा गाँधी के शैक्षिक विचार

प्राप्तिः 15.06.2024
स्वीकृतः 28.06.2024

डॉ० विनोद कुमार यादव
पूर्व शोधार्थी, इतिहास विभाग
चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय परिसर, मेरठ
ईमेलः *vinod973@gmail.com*

49

सारांश

ऐतिहासिक दृष्टि से शिक्षा किसी भी आधुनिक, सभ्य, उन्नत और विकसित कहे जाने वाले समाज का अनिवार्य लक्षण है और इसके बिना प्रगति कभी भी पूर्ण और बहुआयामी नहीं हो सकती। एक शिक्षित व्यक्ति, शिक्षित समाज या शिक्षित राष्ट्र ही प्रगति के दुर्गम पथ पर अनवरत यात्रा कर पाने में समर्थ होता हैं शिक्षा पर विचार करते समय कुछ मूलभूत प्रश्न स्वाभाविक रूप से उठते हैं। मसलन शिक्षा क्या है? इसके उद्देश्य क्या है? शिक्षित राष्ट्र क्या है? और शिक्षित समाज के लक्ष्यों को प्राप्त करने में भारत किस सीमा तक सफल हुआ हैं? मूलभूत स्तर तक शिक्षा का प्रवाह सुगम बनाने में हम कहाँ तक कामयाब हुए हैं?

उक्त चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए जब मन विचलित होता है तो गांधी की तरफ ध्यान जाता है वर्तमान शिक्षा के दोषों को दूर करने के लिए हमें गांधी के शैक्षिक विचारों की ओर ध्यान देना होगा क्योंकि उनके विचार प्रगतिशील विचार है। इसमें मनोवैज्ञानिक पुट है दर्शन सम्मता भी इसमें है।

शिक्षण विधि में गांधी महत्वपूर्ण परिवर्तन चाहते थे इस परिवर्तन की दिशा में वे पहली बात यह चाहते थे कि शिक्षण का माध्यम मातृभाषा हो। वे कहते है कि शिक्षा के द्वारा व्यक्ति में स्वालम्बन का गुण आना आवश्यक है। जब बालक विद्यालय की शिक्षा समाप्त करे तो वह अपने पैरो पर खड़ा हो सके इसके लिए व्यवसायिक दक्षता प्राप्त करनी होगी।

गांधी जीवन के किसी भी पक्ष तक ही अपने विचार सीमित नही रखते थे वे बालक के सर्वांगीण विकास को शिक्षा का उद्देश्य मानते थे और कहते थे कि शिक्षा का अर्थ शरीर, मन एवं आत्मा सभी का सर्वोतम विकास है किसी एक पक्ष का विकास एकांकी है।

मुख्य बिन्दू

वर्धा योजना, शिक्षा, आधुनिक विश्व, बुनियादी शिक्षा, महात्मा गांधी प्रासंगिकता आदि।

गाँधी के व्यक्तित्व एवं उपलब्धियों का मूल्यांकन आधुनिक इतिहास लेखन में एक विवादास्पद विषय रहा है। ऐसा माना जाता है कि गाँधी के अन्तर्गत राष्ट्रीय आन्दोलन के सामाजिक आधार में व्यापक विस्तार हुआ तो दूसरी तरफ यह भी कहा जाता है कि गाँधी के अन्तर्गत राष्ट्रीय आन्दोलन ने एक निश्चित स्वरूप ग्रहण किया। गाँधी के प्रशंसकों की तुलना में उनके आलोचक भी कम नहीं हैं। मार्क्सवादियों ने उन्हें बुर्जुआ हितों का एजेंट करार दिया। औपनिवेशिक सरकार ने उन्हें शांति व्यवस्था का शत्रु माना। वहीं परंपरावादियों ने उन्हें सामाजिक समन्वय का भंजक करार दिया। आधुनिकतावाद से प्रेरित चिन्तकों ने उन्हें पश्चगामी (Backward looking) कहा तो उनके राजनीतिक प्रतिद्वंद्वियों ने उन्हें सत्तालोलुप माना। उसी तरह मुस्लिम संप्रदायवादियों ने उन्हें *हिन्दू राष्ट्रवादी* करार दिया तो दूसरी तरफ निम्न जाति के कतिपय नेताओं ने उन्हें उच्च वर्ण के लोगों के हितों का संपोषक माना। और अन्त में साम्राज्यवादी विद्वान, जूडिथ ब्राउन, ने भारतीय राजनीति में गाँधी के उद्भव को उपठेकेदारों के माध्यम से एक उच्चस्तरीय राजनीतिक प्रबंधन करार दिया। इस तरह गाँधी का व्यक्तित्व मूल्यांकन आधुनिक भारत के इतिहास का एक बहुत ही विवादास्पद विषय रहा है। परन्तु हम उपर्युक्त बातों का परीक्षण गाँधी की राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक विचारधारा और उनकी कार्यप्रणाली की व्याख्या के मध्य करेंगे।[1]

वर्ष 1937 की गरमी में, 67 वर्ष की आयु में, महात्मा गाँधी ने एक ऐसी क्रांतिकारी शिक्षा का प्रस्ताव रखा, जो भारत में अगले 30 वर्षों तक सरकार की शिक्षा नीति को प्रभावित करने जा रही थी। इस अध्ययन का उद्देश्य इस शिक्षा योजना के इर्द–गिर्द घूमते संदर्भ पर प्रकाश डालना, इसकी संकल्पना (अवधारणा) की सत्यता में गहरी पैठ बनाना, और यह देखना है कि अपने विकास के आरंभिक चरणों से ही यह योजना क्यों और कैसे अपनी ही उग्र–सुधारवादिता की आग में झुलसने लगी थी। इसलिए इस विश्लेषण में इस योजना की राजनीतिक पृष्ठभूमि, इसके सार–सिद्धांतों, इसके प्रभावों, इसकी अर्थापत्तियों (निहितार्थों), इसके रूपांत्रण पर चर्चा और अंततः इस योजना का एक मूल्यांकन शामिल है।[2]

गाँधी के अनुसार शिक्षा का कोई एक उद्देश्य नहीं हो सकता। उन्होंने जीवन के सभी पक्षों को ध्यान में रखा है एवं शिक्षा को तदानुसार कई दृष्टिकोणों से देखा है। गाँधी के अनुसार शिक्षा के द्वारा व्यक्ति में स्वावलम्बन का गुण आना आवश्यक है। जब बालक विद्यालयीय शिक्षा समाप्त करे तो वह अपने पैरों पर खड़ा हो सके, इसके लिए व्यवसायिक दक्षता प्राप्त करनी होगी। व्यवसाय में कुशलता प्राप्त करना देश और समाज के लिए तो लाभकारी है ही, स्वयं व्यक्ति के लिए भी आवश्यक है। अतः उन्होंने जीविकोपार्जन के उद्देश्य पर बल दिया है। उनके अनुसार– ''शिक्षा से मेरा मतलब है बालक की समग्र शारीरिक, मानसिक, और आत्मिक शक्तियों का सर्वतोमुखी विकास है।''[3]

उनका स्पष्ट विचार था कि शिक्षा का उद्देश्य आर्थिक लाभ भी होना चाहिए। शिक्षा का कार्य ऐसा हो कि प्रत्येक व्यक्ति को इतनी क्षमता प्राप्त हो कि वह अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रयास करे। महात्मा गाँधी ने शिक्षा के मुख्य उद्देश्यों मे शारीरिक विकास को रखा है तथा इसकी प्राप्ति हेतु शारीरिक श्रम के महत्त्व को बताया है। अतः शिक्षा के क्षेत्र में उन्होंने कर्म प्रधान शिक्षा का सूत्रपात किया।

गाँधी ने व्यवसाय को जीवन के साध्य के रूप में कभी नहीं स्वीकार किया। उन्होंने संस्कृति की ओर भी ध्यान दिया। गाँधी ने कहा– ''मै शिक्षा के साहित्यिक पक्ष की अपेक्षा सांस्कृतिक पक्ष को अधिक महत्त्व देता हूँ।[4] संस्कृति प्रारम्भिक वस्तु एवं आधार है जिसे बालक–बालिकाओं को यहाँ से ग्रहण करना चाहिए। वह शिक्षा के सांस्कृतिक उद्देश्य को महत्त्वपूर्ण मानते थे। उनके अनुसार ''हमारे समय की भारतीय संस्कृति अभी निर्माण की अवस्था मे है, मैं नही चाहता कि मेरा घर (भारत) हर तरफ खड़ी हुई दीवारों से घिरा रहे और उसके दरवाजे और खिड़कियाँ बन्द कर दी जाये, मैं तो यही चाहता हूँ कि मेरे घर के आस–पास देश–विदेश की संस्कृतियों की हवा बहती रहे पर यह नहीं चाहता कि उस हवा से मेरे पैर जमीन पर से उखड़ जायें और हम औंधे मुँह गिर पड़े।[5] अतः वह चाहते थे कि देश के बालक–बालिकाओं में यदि साहित्य में रस हो तो वह दुनिया की दूसरी भाषाओं की तरह ही अंग्रेजी को भी जी भर कर पढ़े लेकिन हिन्दुस्तान का एक भी आदमी अपनी मातृभाषा को न भूल जाये यह वह कदापि बर्दाश्त नहीं करते थे।

गाँधी के अनुसार यह शिक्षा का अगला महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है। उन्होंने अपनी आत्म कथा में लिखा है– ''मैंने ह्रदय की संस्कृति या चरित्र निर्माण को सदा प्रथम स्थान दिया है। मैंने चरित्र निर्माण को शिक्षा की उपयुक्त आधारशिला माना है।[6]

गाँधी की बुनियादी शिक्षा पर गौर करें, तो मन में एक ऐसी शिक्षा–प्रणाली उभरती है जो समकालीन थी, किंतु आधुनिक नहीं; जो आदर्श थी, किंतु व्यावहारिक नहीं और जो थोड़ी–बहुत सफल हो सकती थी, किंतु अंततः 'असफल' रही। श्री फैग वर्ष 1937 की गरमी में महात्मा गाँधी द्वारा प्रस्तुत उस 'क्रांतिकारी शिक्षा प्रस्ताव' पर लोगों की उपरोक्त प्रतिक्रियाओं से संभवतः सहमत नहीं हैं, क्योंकि वह मानते हैं, और उनका मानना सही भी है, कि यह (प्रस्ताव) 'अगले तीस वर्षों तक भारत में सरकार की नीति को प्रभावित करने वाला था।' वह मानते हैं कि गाँधी जी की बुनियादी शिक्षा की हाल की अधिकांश व्याख्याएँ या कि समझ यथार्थ से परे और बहुत हद तक लेखकों की गौण स्रोतों तक पहुँच पर आधारित रही है। इसके विपरीत, इस योजना की राजनीतिक पृष्ठभूमि, इसके सारभूत सिद्धांतों, इसके निहितार्थों के विश्लेषण और योजना के एक मूल्यांकन के लिए उनका अध्ययन वापस मूल स्रोतों पर लौटता है।[7]

किसी भी राष्ट्र का भविष्य उसके नर–नारियों के चरित्र पर निर्भर है। चरित्र निर्माण का कार्य शिक्षा के द्वारा होता है। चरित्र से तात्पर्य नैतिक चरित्र हैं। इसके बिना व्यक्ति अथवा समाज किसी की भी प्रगति नही हो सकती। बालकों को चरित्र की शिक्षा देने से पहले माता–पिता तथा गुरूजन सभी चरित्रवान् हों, उनके आदर्श, विचार उच्च होने चाहिए क्योंकि बालक में अनुकरण करने की प्रवृत्ति होती है। यदि शिक्षक व माता–पिता चरित्रवान् होंगे तभी बालकों में चारित्रिक गुणों व नैतिक भावनाओं का विकास हो सकेगा। साथ ही शिक्षा की व्यवस्था इस प्रकार की हो जिससे बालको मे चारित्रिक गुणो का विकास हो।

गाँधी के अनुसार– ''केवल अक्षर–ज्ञान की शिक्षा से किसी का नैतिक स्तर तिलभर भी ऊँचा नही उठता। चरित्र निर्माण शिक्षा से बिल्कुल स्वतंत्र चीज है।[8] गाँधी जीवन के किसी एक पक्ष तक ही अपने विचार सीमित नहीं रखते थे। वे बालक के सर्वांगीण विकास को शिक्षा का उद्देश्य मानते

थे। उनके अनुसार– ''शिक्षा का अर्थ शरीर, मन तथा आत्मा सभी का सर्वोत्तम विकास है। किसी एक पक्ष का विकास एकांगी है।'' वास्तव मे बुद्धि का सच्चा शिक्षण, सच्चा विकास तभी हो सकता है जब शरीर के अवयवों को यानि–हाथ, पैर, आँख, कान, नाक आदि को सही ढंग की कसरत एवं शिक्षा मिले। इसी के द्वारा बालक या मनुष्य की समग्र शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शक्तियों का सर्वतोमुखी विकास सम्भव हैं।''[9]

हम सभ्यता के रोग मे ऐसे फँस गये हैं कि अंग्रेजी शिक्षा लिये बिना अपना काम चला सकें ऐसा समय अब नहीं रहा। जिसने वह शिक्षा पाई है, वह उसका अच्छा उपयोग करे। अंग्रेजों के साथ के व्यवहारों में, ऐसे हिन्दुस्तानियों के साथ के व्यवहार में जिनकी भाषा हम समझ न सकते हों और अंग्रेज खुद अपनी सभ्यता से कैसे परेशान हो गये हैं, यह समझने के लिए अंग्रेजी का उपयोग किया जाये। जो लोग अंग्रेजी पढ़े हुए हैं, उनकी संतानों को पहले तो नीति सिखानी चाहिये, उनकी मातृभाषा सिखानी चाहिये और हिन्दुस्तान की एक दूसरी भाषा सिखानी चाहिये। बालक जब पुख्ता (पक्की) उम्र के हो जाये तब भले ही वे अंग्रेजी शिक्षा पायें, और वह भी उसे मिटाने के इरादे से, न कि उसके जरिये पैसे कमाने के इरादे से। ऐसा करते हुए भी हमें यह सोचना होगा कि अंग्रेजी में क्या सीखना चाहिये और क्या नहीं सीखना चाहिये। कौन से शास्त्र पढ़ने चाहिये, यह भी हमें सोचना होगा। थोड़ा विचार करने से हमारी समझ मे आयेगा कि अगर अंग्रेजी डिग्री लेना हम बन्द कर दें, तो अंग्रेज हाकिम चौकेंगे।[10]

क्योंकि शिक्षा का केन्द्र बिन्दु मानव है। इस कारण मानव के सर्वतोन्मुखी विकास पर गाँधी ध्यान देते थे। शिक्षा का उद्देश्य मानव आत्मा की स्वतंत्रता भी माना गया है। उपयुक्त शैक्षिक उद्देश्यों के अतिरिक्त गाँधी प्राचीन भारतीय ऋषियों की भाँति यह भी कहते थे कि विद्या सदा मुक्ति के लिए होनी चाहिए। ''सा विद्या या विमुक्तेये'' उनका भी आदर्श था। शिक्षा द्वारा ''आध्यात्मिक स्वतंत्रता की प्राप्ति से ईश्वर का ज्ञान एवं आत्मानुभूति होती है। शिक्षा का यही अन्तिम लक्ष्य है, अन्य उद्देश्य तो तात्कालिक है। चरम लक्ष्य के रूप मे गाँधी ईश्वर के ज्ञान एवं आत्मानुभूति को ही स्वीकार करते थे। गाँधी के अनुसार– ''मेरा मत है कि बुद्धि की सच्ची शिक्षा हाथ, पैर, आँख, कान, नाक आदि के आभास और शिक्षण से हो सकती है। आध्यात्मिक शिक्षा से मेरा तात्पर्य हृदय की शिक्षा से है।[11]

गाँधी परम सत्य और परम संभावना में विश्वास रखते थे। निस्संदेह, यह एक असाधारण तर्क है, किंतु यदि हमारा समीक्षक समुदाय बिना किसी संदेह इसकी अनुमति दे, तो उनके संसार में झाँकने के लिए अपनी पड़ताल के पीछे अदेखे आयाम का संयोजन करते हुए, हमें इन दो सिद्धांतों को समझना चाहिए। वहीं, यह बात हमें शुरू में ही जान लेनी चाहिए कि उनका यह संसार कितना मताग्रही है। यानी, यह एक सार्वजनीन (वैश्विक) दृष्टिकोण है जो हमारी जैसी पूर्व धारणाओं से संचालित होने को कतई तैयार नहीं है। इस पड़ताल के क्रम में, हमारी अपनी दोषदर्शिता की गूँज 'महात्मा' के इर्द–गिर्द कार्य करने वालों के विचारों में प्रतिध्वनित होगी, किंतु जब बात गाँधी के अपने निहित संदेश को समझने की हो, तो दोषदर्शिता उसके लिए निश्चय ही कोई उपयोगी साधन नहीं है। इसकी बजाय, यदि कहने की छूट हो, हमें अपनी दोषदर्शिता में दोष ढूँढ़ना होगा। इस एक मनोदशा से, अविश्वास को क्षणभर के लिए दूर रखकर अपनायी गई उदारता से ही विचार, प्रबंध और

सबसे बढ़कर अभियान के एक प्रकार के रूप में गाँधीवादी आदर्श को उसका उचित स्थान मिल सकता है।[12]

जड़ों की ओर

गाँधी और शिक्षा पर अब तक जो कुछ लिखा गया है, उसमें से अधिकांश के साथ इस लेख में असंतोष का संकेत मिलता है। इस प्रचुर प्राथमिक सामग्री को साधने के श्रमसाध्य कार्य से रू–ब–रू होने पर, और खास विषय–वस्तुओं पर गाँधीवादी 'विचारों' अथवा 'सिद्धांत' को मान लेने की कोशिश में दुर्भाग्यवश बहुत–से लेखकों ने गाँधी के लेखन के गौण स्रोतों अथवा संग्रहों पर अत्यधिक भरोसा किया। इस तरह का संकीर्ण मार्ग अपनाना एक ऐसे व्यक्तित्व के मामले में निहायत निंदनीय है, जिनके लिए उन्हें जो कुछ कहना था उसका लौकिक संदर्भ होना अति महत्त्वपूर्ण था।

गाँधी की सत्य की दृढ़ या अटल माँग के प्रति सम्मान दर्शाते हुए इस लेख में शिक्षा पर उनकी मान्यताओं के विकास के उस सर्वाधिक निर्णायक काल का एक विस्तृत संदर्भपरक अध्ययन प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। कई कारणों से, जो यथासमय सामने आ जाएँगे, वर्ष 1937 की गरमी में शुरू, लगभग छह महीनों की यह अवधि गाँधी के मन में चार दशकों से अधिक समय से पनप रहे कुछ खास विचारों के संघनित और मुखरित होने की निर्णायक अवधि थी। उस वर्ष अक्टूबर में, अपनी हरिजन पत्रिका में गाँधी ने यह कहते हुए स्वयं इस बात पर जोर दिया कि 'मैं ऐनक से पिछले 40 वर्षों से जो कुछ धुँधलेपन में देखता रहा उसे अब परिस्थितियों के दबाव में बिलकुल स्पष्ट देखने लगा हूँ।[13]

सड़सठ वर्ष की आयु में, कतिपय पूर्ववर्ती संकेत के साथ, गाँधी ने अनायास एक क्रांतिकारी प्रस्ताव रखा जो भारत में अगले 30 वर्षों तक सरकार की शिक्षा नीति को प्रभावित करने जा रहा था। इस अध्ययन का उद्देश्य इस शिक्षा योजना के इर्द–गिर्द घूमते संदर्भ पर प्रकाश डालना, इसकी संकल्पना (अवधारणा) की सत्यता में गहरी पैठ बनाना, और यह देखना है कि अपने विकास के आरंभिक चरणों से ही यह योजना क्यों और कैसे अपनी ही उग्र–सुधारवादिता की आग में झुलसने लगी थी। इसलिए इस विश्लेषण में इस योजना की राजनीतिक पृष्ठभूमि, इसके सार–सिद्धांतों, इसके प्रभावों, इसकी अर्थापत्तियों (निहितार्थों), इसके रूपांतरण पर चर्चा और अंततः इस योजना का एक मूल्यांकन शामिल है।

शिक्षा के विकास की गाँधी की रणनीति की इस तथाकथित 'असफलता' के पीछे चाहे जो भी कारण बताए जाते हों, इस गाँधीवादी सत्य को मूर्त रूप देने पर कोई सवाल नहीं उठाया जा सकता और यह कि इसका चिरंतन महत्त्व है। आवश्यक बस इतना है कि हमारा दिल–दिमाग खुला हो।

यह विचार मौलिक है। हो सकता है कि यह गलत सिद्ध हो जाए, पर इससे इसकी मौलिकता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता और जब तक किसी मौलिक विचार की परख पर्याप्त विस्तृत पैमाने पर न हो, उस पर सामने से प्रहार नहीं किया जा सकता। किसी चीज को आजमाने से पहले ही यह कह देना कि यह असंभव है, अपने आप में कोई तर्क नहीं है।[14]

आधुनिक शैक्षिक सन्दर्भ में महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों की महान् उपयोगिता है। इसमे ऐसे शैक्षिक सिद्धान्तों, मान्यताओं तथा अवधारणाओं का समायोजन मिलता है जिसके आधार पर इसे आधुनिक विश्व एवं भारत की शैक्षिक आवश्यकताओं के संदर्भ में सजीव शिक्षा दर्शन कहा जा सकता है तथा इसकी उपयोगिता भविष्य में भी अक्षुण्ण रहेगी। गांधी युग पुरूष थे, उनके शैक्षिक विचारों को जीवन में उतारने की आवश्यकता है।

संदर्भ

1. सिंह, मणिकांत. (2010). भारतीय इतिहास–एक विश्लेषण. किताब महलः इलाहाबाद. पृष्ठ 247.
2. हेनरी, फैग. (2021). जड़ो की ओर– गाँधी जी की बुनियादी शिक्षा का अध्ययन. राष्ट्रीय पुस्तक न्यास (N.B.T): भारत. पृष्ठ 9.
3. बोस, निर्मल कुमार. (1964). सिलेक्शन्स फ्रॉम गाँधी. नवजीवन प्रकाशन मन्दिरः अहमदाबाद. पृष्ठ 256.
4. गाँधी, एम०के०. (1946). व्याख्यान. नई दिल्ली. 22 अप्रैल।
5. बोस, निर्मल कुमार. (1964). सिलेक्शन्स फ्रॉम गाँधी. नवजीवन प्रकाशन मन्दिरः अहमदाबाद. पृष्ठ 267.
6. गाँधी, एम० के०. (1957). आत्मकथा. नवजीवन प्रकाशन मन्दिरः अहमदाबाद. पृष्ठ 5.
7. हेनरी, फैग. (2021). जड़ो की ओर, गाँधी जी की बुनियादी शिक्षा का अध्ययन. राष्ट्रीय पुस्तक न्यास (N.B.T.): भारत. पृष्ठ 13.
8. बोस, निर्मल कुमार. (1964). सिलेक्शन्स फ्रॉम गाँधी. नवजीवन प्रकाशन मन्दिरः अहमदाबाद. पृष्ठ 255.
9. गाँधी, महात्मा. (1937). हिन्दी साप्ताहिक हरिजन सेवक. 31 जुलाई।
10. गाँधी, महात्मा. (1949). हिन्द स्वराज. नवजीवन प्रकाशन मन्दिरः अहमदाबाद. पृष्ठ 73–74.
11. गाँधी, महात्मा. (1937). हरिजन पत्रिका. 8 मई।
12. हेनरी, फैग. (2021). जड़ो की ओर, गाँधी जी की बुनियादी शिक्षा का अध्ययन. राष्ट्रीय पुस्तक न्यास (N.B.T.): भारत. पृष्ठ 17.
13. वही. पृष्ठ 21–22.
14. वहीं. पृष्ठ 22.